P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I * Issue- VI* July - 2016

महात्मा ज्योतिराव फुले : एक सामाजिक क्रान्तिकारी

अनुज तोमर
सहायक अध्यापक,
इतिहास विभाग,
जनता वैदिक इण्टर कॉलज,
बड़ौत, बागपत

भरत प्रताप सिंह
शोधार्थी,
राजनीतिक विज्ञान विभाग,
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

सारांश

19वीं शताब्दी भारतीय सामाजिक जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन लायी, अनेक समाज सुधारकों द्वारा किये गये उल्लेखनीय प्रयास इसके लिए उत्तरदायी रहे। महात्मा ज्योतिराव फुले का नाम भारतीय समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाले उन समाज सुधारकों में अग्रगण्य है।महात्मा ज्योतिराव फुले का विचार था कि कोई भी समाज तब तक सबल, सुदृढ़ तथा शक्तिशाली नहीं बन सकता, जब तक कि उसमें जाति, धर्म, सम्प्रदाय तथा पंथों के नाम पर विघटनकारी तत्व उपस्थित हैं। फुले ने तत्कालीन सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुधार हेतु निरन्तर प्रयास किया। स्त्री शिक्षा, विधवाओं की सामाजिक स्थिति, शूद्र–अतिशूद्रों की शिक्षा, धोखा खायी स्त्रियों की गुप्त एवं सुरक्षित प्रसूति, विधवा–पुनर्विवाह, किसानों, श्रमिकों की स्थिति में सुधार, देवदासी व सती प्रथा का विरोध आदि के लिए वे जीवन पर्यन्त प्रयासरत रहे। फुले ने सर्वप्रथम शूद्र–अतिशूद्रों एवं पिछड़ों को संगठन एवं उसकी शक्ति का पाठ पढ़ाया। उन्हें शिक्षा एवं संगठन द्वारा अपनी सामाजिक स्थिति में सधार हेतु प्रेरित किया। वे महात्मा ज्योतिराव फुले ही थे जिन्होंने सर्वप्रथम सरकार को दलितों, शूद्र–अतिशूद्रों की स्थिति में सुधार हेतु सार्वजनिक सेवाओं में आरक्षण देने का प्रस्ताव दिया। डा0 भीमराव अम्बेड़कर ने इन्हें अपना गुरू स्वीकार किया तथा इनके विचारों से प्रेरणा लेकर वे दलितोत्थान के कार्यों में प्रवृत्त हुए।

मुख्य शब्द : महात्मा ज्योतिराव फुले, सामाजिक क्रान्तिकारी, गुलामगिरी, शूद्र–अतिशूद्रों की शिक्षा, नारी शिक्षा, नारी मुक्ति के जनक, मुण्ड़न, बालहत्या–प्रतिबन्धक गृह।

प्रस्तावना

भारत विभिन्न धर्मों, जातियों, पंथों एवं मान्यताओं वाला देश है। विभिन्न सम्प्रदायों एवं उनकी परम्पराओं में जमीन–आसमान का अन्तर पाया जाता है, फिर भी भारतीय होने का गौरव उनमें एकीकरण की दृढ़ भावना का संचार करता है। धर्म एवं उससे उत्पन्न जाति व्यवस्था का भारतीय समाज के निर्माण में मुख्य योगदान है, एक प्रकार से ये भारतीय समाज एवं संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। किन्तु कालान्तर में धर्म एवं जाति व्यवस्था की मनमानी, कुटिल एवं स्वार्थपूर्ण व्याख्या ने भारतीय समाज में अनेक कुत्सित कुप्रथाओं तथा कुरीतियों को जन्म दिया, जिससे भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था में विकृतियाँ उत्पन्न हुईं। भारतीय समाज में व्याप्त इन्हीं अमानवीय मान्यताओं तथा परम्पराओं और इनसे उत्पन्न सामाजिक वैमनस्य एवं भेदभाव के तत्वों की समाप्ति हेतु उदारवादी एवं मानवीय अस्मिता का सम्मान करने वाले सहृदय लोगों ने अथक परिश्रम किया। भारतीय समाज के शुद्धिकरण हेतु कार्य करने वाले इन महापुरुषों को समाज–सुधारक की संज्ञा दी गयी है। इन्हीं समाज–सुधारकों के बीच एक दैदिप्यमान नक्षत्र की भाँति ''महात्मा ज्योतिराव फुले' का नाम अपनी आभा बिखेर रहा है।

महात्मा ज्योतिराव फुले का जन्म 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महाराष्ट्र में हुआ था। ''समकालीन सामाजिक जीवन से सम्बन्धित शायद ही कोई ऐसी समस्या रही होगी, जिसके निवारण हेतु महात्मा ज्योतिराव फुले ने प्रयास न किया हो। नारी शिक्षा, शूद्र–अतिशूद्रों की शिक्षा, ब्राह्मण विधवाओं का मुण्ड़न रोकने के लिए नाइयों का संगठन, धोखा खाई हुई विधवाओं की गुप्त तथा सुरक्षित प्रसूति, उनके अवैध माने जाने वाले बच्चों के पालन–पोषण का प्रबन्ध, विधवाओं का पुनर्विवाह, सती एवं देवदासी प्रथा का विरोध, अकाल के दौरान बालकों के भोजन का प्रबन्ध आदि कार्यों के साथ–साथ उन्होंने किसानों, मिल मजूदरों,कृषि–श्रमिकों आदि के कल्याण का कार्य भी किया। इन सभी कार्यों से बढ़कर समाज में शूद्रों, अतिशूद्रों को जागरूक किया तथा यथा स्थिति में संतुष्ट रहने वाले इन दलित वर्गों हेतु एक वर्गहीन, शोषणमुक्त समाज के गठन का कठिन प्रयास किया।''[1]

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I * Issue- VI* July - 2016

महात्मा ज्योतिराव फुले ने जब समाज–सुधार को अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया और उसके क्रियान्वयन के विषय में सोचा, तो पाया कि हमारे देश में पुरातन काल से ही दो वर्ग सदैव पिछड़े हुए और दमन का शिकार होते रहे हैं– उनमें एक है नारी वर्ग और दूसरा है दलित वर्ग, जिसे उस समय अछूत कहा जाता था। फुले ने इन दोनों वर्गों का उद्धार करने का बीड़ा उठाया, किन्तु प्रथम उन्होंने नारी वर्ग को वरीयता दी, उनका मानना था कि जब तक महिलाएँ शिक्षित नहीं हो जाती तब तक कोई समाज सच्चे अर्थों में शिक्षित नहीं हो सकता। एक शिक्षित माता ही परिवार को सुसंस्कृत कर सकती है तथा सुसंस्कृत, शिक्षित परिवार ही एक प्रगतिशील समाज का आधार होता है।

''महात्मा फुले द्वारा पहली कन्या पाठशाला सन् 1848 ई0 मे पुणे में खोली गई। नारी शिक्षा के फुले के प्रयासों में कट्टरपंथियों ने अनेक रोड़े अटकाये, उन्हें ड़राने–धमकाने का प्रयास भी किया गया, लेकिन ज्योतिराव अपनी बात पर अटल रहे।''[2] यही नहीं जब कन्या पाठशाला के लिए कोई अध्यापक उपलब्ध नहीं हुआ तो फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को स्वयं शिक्षित करके अध्यापक के रूप में नियुक्त किया। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में कई शताब्दियों से अज्ञान के गहन अन्धकार से घिरी हुई नारियों को मुक्त कराने वाले महापुरुष हैं ज्योतिराव फुले। वे नारी मुक्ति के जनकों में से एक हैं।

महात्मा ज्योतिराव फुले ने शूद्र, अतिशूद्रों की शिक्षा के लिए भी गम्भीर प्रयास किये, उनका मानना था कि दलित वर्ग के पतन का सबसे प्रमुख कारण उनका शिक्षा से विमुख होना अथवा कर दिया जाना है। ''फुले द्वारा 1873 ई0 में रचित 'गुलामगिरी' नामक ग्रन्थ में उन कारणो का विस्तार से उल्लेख किया गया है, जिन्होंने दलित वर्ग को अत्यन्त निम्न एवं दयनीय स्थिति में पहुँचाया। उनमें सर्वप्रमुख कारण अशिक्षा है, अशिक्षित होने की स्थिति में अन्धविश्वास ने दलित समाज में अपनी जड़ें जमा ली और उन्होंने तार्किक विश्लेषण किये बिना ही धर्मग्रन्थों की उचित–अनुचित बातों को स्वीकार कर लिया। इस अन्धानुकरण का परिणाम यह हुआ कि वे पतन के गर्त में समाते चले गये, उनमें तार्किक क्षमता का पूर्णतः लोप हो गया।''[3] अविद्या के दुष्परिणामों के विषय में फुले कहते हैं कि–

''विद्या बिना मति गई, मति बिना गति गई, गति बिना अर्थ गया और अर्थ बिना शूद्र ध्वस्तु हुए।''[4]

अतः स्पष्ट है कि अविद्या के कारण कितना अनर्थ हुआ। फुले ने अपने जीवनकाल में 18 से अधिक शिक्षण संस्थानों की स्थापना की। महात्मा फुले ने दलित वर्गों में ज्ञान के प्रसार के साथ–साथ वर्गीय चेतना दृष्टि जागृत करने का भी कार्य किया। इस वर्ग बोध के विकास के साथ उन्होंने यह स्वप्न देखा था कि इसको आधार बनाकर एक वर्गविहीन समाज की रचना होगी। महात्मा फुले द्वारा दलित वर्ग में ज्ञान का प्रसार करके वर्गीय चेतना जागृत करना और फिर उस वर्गीय चेतना के आधार पर वर्गविहीन समाज का निर्माण करने की सोचना वास्तव में अभिनव प्रयास था।

''महात्मा ज्योतिराव फुले के समय में विधवाओं की स्थिति बहुत बुरी थी और उनमें भी ब्राह्मण विधवाओं की स्थिति तो पशुआ से भी हीन थी, समकालीन समय में ब्राह्मण स्त्री के विधवा होने पर अन्य सामाजिक वर्जनाओं के साथ–साथ उन्हें मुण्ड़न जैसी अपमानजनक कुप्रथा का भी पालन करना होता था, फुले इससे अत्यन्त व्यथित थे। अतः उन्होंने इसे समाप्त करने के लिए पूना के नाईयों की एक सभा बुलाई तथा उन्हें समझाया कि पहले से ही भाग्य की मारी इन विधवाओं के साथ 'मुण्ड़न' जैसा कृत्य करना अमानुषिक है। अतः आप सभी को इस कुकृत्य से इंकार कर देना चाहिए। नाइयों को फुलें की बात समझ में आ गई और उन्होंने विधवाओं का मुण्ड़न बन्द कर दिया। धीरे–धीरे सम्पूर्ण महाराष्ट्र में यह कुप्रथा बन्द हो गयी तथा विधवा स्त्रियाँ भी समाज में अन्य स्त्रियों की भाँति सकेशा बनकर रहने लगी।''[5]

समाज–सुधार के क्षेत्र में फुले का सबसे क्रान्तिकारी कार्य था, विधवाओं के लिए सुरक्षित एवं गुप्त प्रसूति तथा उनके जन्मे बालकों के पालन–पोषण के लिए ''बाल हत्या प्रतिबन्धक गृह'' की स्थापना। कम आयु में विधवा हुई स्त्रियाँ, युवावस्था में काम के वशीभूत होकर अथवा किसी कामी पुरुष की बातों में आकर गर्भवती हो जाती थी,फिर लोक–लाज के भय से वह उस भ्रूण की अथवा जन्मे शिशु की हत्या करने पर विवश हो जाती थी। ज्योतिराव फुले इस प्रकार की बालहत्या से बहुत दुःखी थे तथा इसे रोकना चाहते थे। ''उन्होंने अत्यन्त मंथन–मनन के साथ 'बाल–हत्या प्रतिबंधक गृह' की स्थापना की, जिसमें विधवाएँ गुप्त रूप से आकर प्रसूति करा सकती थी तथा वे चाहें तो अपने शिशु को ले जा सकती थी अन्यथा पालन–पोषण का जिम्मा भी ज्योतिराव फुले ही वहन करते थे।''[6] अनेक विधवाऐं उनके इस ''बाल हत्या प्रतिबन्धक गृह'' में आयी तथा अपने शिशुओं को जन्म देकर चली गई। फुले ने उन शिशुओं का पालन पोषण किया। फुले दम्पति निःसंतान थे, इन्हीं त्यागे गये शिशुओं में से एक 'यशवंत' को उन्होंने अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। तत्कालीन रूढ़िवादी समाज में फुले द्वारा किया गया यह कार्य उन्हें एक सच्चे सामाजिक–क्रान्तिकारी के रूप में स्थापित करने के लिए पर्याप्त आधार–प्रदान करता है।

इसी प्रकार महात्मा फुले ने सतीप्रथा, विधवा पुनर्विवाह निषेध जैसी कुप्रथाओं के विरूद्ध भी आक्रामक रूप से कार्य किया तथा विधवा विवाह सम्पन्न कराये। ''तत्कालीन समय में उच्च वर्गों से लेकर निम्न वर्गों तक में मद्यपान एक विकट सामाजिक बुराई थी। इस बुराई को समाप्त करने के लिए महात्मा फुले ने पुणे नगर पालिका को उसके एक सदस्य के रूप में रहते हुए मद्यशालाओं को बन्द करने के लिए प्रस्ताव भेजा। दुर्भाग्य से पुणे नगर पालिका के पास मद्यशालाओं को बन्द करने का अधिकार नहीं था तथा अंग्रेज सरकार टैक्स के लालच में इन्हें बन्द नहीं करना चाहती थी, तथापि फुले अपने स्तर से लोगों को इस बुराई के विषय में जागरूक करते रहे।''[7]

दक्षिण भारतीय समाज में देवदासी प्रथा प्राचीनकाल से ही प्रचलित थी, इस प्रथा में व्यक्ति अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के बदले में अपनी पुत्री को मंदिर में भगवान की सेवा के लिए समर्पित कर देता था, किन्तु

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I * Issue- VI* July - 2016

कालान्तर में यह प्रथा, कुप्रथा के रूप में परिवर्तित हो गयी। वे कन्याऐं जो देवदासी के रूप में मन्दिर को समर्पित कर दी जाती थी, पतित पण्ड़े–पुरोहितों, उनके शिष्यों तथा समाज के दुष्ट कामी पुरुषों की वासनापूर्ति का साधन बनने लगी। ''फुले देवदासी प्रथा के दुर्गुणों से भली–भाँति परिचित थे तथा इसे समाप्त करना चाहते थे, उन्होंने इसकी समाप्ति के लिए लोगों को जागरूक किया तथा देवदासी प्रथा के अवगुणों से अवगत कराया। उन्होंने एक धनी महिला को जो अपनी पुत्री को मन्दिर में देवदासी बनाने के लिए समर्पित करने जा रही थी को, पुलिस के उच्च अधिकारियों को इस प्रथा के अवगुण बता कर रोका, जिससे उस बेचारी कन्या का जीवन नर्क बनने से बच गया।''[8] इस प्रकार महात्मा फुले ने अपने विचारों को न केवल सिद्धान्तों के रूप में प्रस्तुत किया अपितु व्यवहार में भी उनका पालन किया।

महात्मा ज्योतिराव फुले के कार्यक्षेत्र तथा समाज–सुधार के कठिन कार्य में उन्हें मिली अविस्मरणीय सफलता एवं भारतीय समाज के दलित तथा शोषित वर्गों में उनके प्रयासों से आये सुधार और जागरूकता को देखते हुए उन्हें समाज सुधारक की अपेक्षा, सामाजिक क्रान्तिकारी की संज्ञा देना, उनके व्यक्तित्व का अतिरंजन नहीं होगा अपितु एक सच्चे समाजसेवी को सच्ची श्रद्धांजली होगी।

आजादी के इतने वर्षों बाद भी भारतीय समाज संविधान की प्रस्तावना में व्यक्त किये गये मूल्यों को स्वयं में आत्मसात नहीं कर पाया है। आज भी जाति, धर्म, समुदाय, सम्प्रदाय, पंथों आदि के नाम पर समाज को विघटित करने का प्रयास किया जा रहा है। सामाजिक विद्वेष का क्षेत्र कम होने के बजाय पुनः बढ़ता जा रहा है। ऐसे समय में हम महात्मा ज्योतिराव फुले जैसे सामाजिक क्रान्तिकारी के अग्रगामी विचारों का आलम्बन लेकर ही भारत तथा हमारी आने वाली पीढ़ियों को उनका गौरवशाली भविष्य दे सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

अपने इस शोध पत्र ''महात्मा ज्योतिराव फुले : एक सामाजिक क्रान्तिकारी'' के माध्यम से मेरा यह प्रयास है कि भारतीय समाज में महात्मा फुले के जीवन आदर्शों, विचारों तथा कार्यों से प्रेरणा लेकर पुनः सहिष्णुता, समरसता तथा भाईचारे का वातावरण स्थापित हो। साथ ही साथ महात्मा ज्योतिराव फुले को भारतीय समाज सुधारकों में वह गौरवमयी स्थान प्राप्त हो जिसके वे वास्तविक अधिकारी हैं। ऐसे महान सामाजिक क्रान्तिकारी तथा उसके अग्रगामी विचारों का अधिकाधिक प्रचार–प्रसार होना चाहिए, ताकि हमारा समाज एकजुट एवं शक्तिशाली बन सके। एकजुट एवं शक्तिशाली समाज ही एक विकसित राष्ट्र का आधार है।

निष्कर्ष

महात्मा ज्योतिराव फुले ने जिन विपरीत परिस्थितियों में भारतीय समाज में सुधार के पावन कार्य को किया, वह अतुल्य है। उन्होंने अपने सामने आ रही हर बाधा को चुनौती के रूप में स्वीकार किया तथा अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर उस बाधा को पार किया। फुले ने कभी भी अपने आदर्शों से समझौता नहीं किया। मानवीय मूल्यों तथा समतावादी दृष्टिकोण पर आधारित समाज की स्थापना उनका अन्तिम लक्ष्य था, और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। फुले के समाज–सुधार का कार्यक्षेत्र अत्यन्त विस्तृत था, वे धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक सभी क्षेत्र में व्याप्त भेदभाव को समाप्त करके एक ऐसा समाज बनाना चाहते थे, जो प्रगतिशील उदारवादी मूल्यों पर आधारित हो तथा मानवीय गरिमा में उत्तरोत्तर वृद्धि करने वाला हो। फुले सभी वर्गों को साथ लेकर चलना चाहते थे, उनकी सोच थी कि यदि समाज में किसी भी वर्ग की उपेक्षा की जाती है तो वह समाज कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। आज के भारतीय समाज के नीतिनियंताओं के लिए भी महात्मा ज्योतिराव फुले के विचार ऐसे आदर्श प्रस्तुत करते हैं, जिन पर चलकर एक मानवतावादी, उदार तथा प्रगतिशील समाज का निर्माण किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय समाजक्रान्ति के जनक– डा0 मु0ब0 शाह, पृ0सं0–58
2. महात्मा ज्योतिबा फुले– कन्हैयालाल चंचरीक, पृ0सं0–25–26
3. महात्मा फुले : समग्रवाङ्मय–फड़के,पृ0सं0–109–192 तथा वेदकुमार वेदालंकार द्वारा अनुवादित'गुलाममिरी', पृ0सं0– 1–116
4. किसान का कोड़ा–महात्मा फुले :समग्रवाङ्मय–फड़के, पृ0सं0– 253
5. महात्मा ज्योतिबा फुले–कन्हैयालाल चंचरीक,पृ0सं0 –57
6. ज्योतिराव फुले–तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी, पृ0सं0–19–20
7. महात्मा ज्योतिबा फुले रचनावली, भाग–2, पृ0सं0– 269–270
8. युगपुरुष महात्मा फुले : मुरलीधर जगताप– पृ0सं0– 93–94